ALL RIGHTS RESERVED
सर्वाधिकार सुरक्षित

2018

हिन्दी भाषा और साहित्य

समय : 3 घण्टे | पूर्णांक : 300

अनुदेश :

- सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
- प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभाजित है।
- प्रत्येक खण्ड से **तीन-तीन** प्रश्नों को चुनते हुए कुल **छः** प्रश्नों के उत्तर दें।
- परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।
- एक ही प्रश्न के विभिन्न भागों के उत्तर अनिवार्य रूप से एक साथ ही लिखे जाएँ तथा उनके बीच में अन्य प्रश्नों के उत्तर न लिखे जाएँ।

खण्ड—क

1. देवनागरी लिपि की विशेषताओं और गुणों पर संक्षेप में विचार कीजिए
2. स्वाधीनता संघर्ष के समय हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप में विकास का उल्लेख कीजिए।
3. उपलब्ध सामग्री के परिप्रेक्ष्य में 'हिन्दी साहित्य के काल-विभाजन' पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
4. "भारतेन्दु हरिश्चन्द्र युग और महावीर प्रसाद द्विवेदी युग के नवजागरण में कुछ मूलभूत अंतर है"—स्पष्ट कीजिए।

(Turn Over)

5. प्रसादोत्तर हिन्दी नाटक और रंगमंच की प्रमुख प्रवृत्तियों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

6. नई कहानी के कथ्य और शिल्पगत वैशिष्ट्य की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

खण्ड—ख

7. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अवतरणों की संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

(क) प्रीति करि दीन्हीं गरे छुरी।
जैसे वधिक चुगाय कपटकन पीछे करत बुरी॥
मुरली मधुर चेंप कर काँपो मोरचंद्र ठटवारी।
बंक बिलोकनि लूक लागि बस सकी न तनहिं सम्हारा॥
तलफत छाँड़ि चले मधुबन को फिरि कै लई न सार।
सूरदास वा कलप-तरोवर फेरि न बैठा डार॥

(ख) उज्ज्वल वरदान चेतना का
सौंदर्य्य जिसे सब कहते हैं;
जिसमें अनंत अभिलाषा के
सपने सब जगते रहते हैं।
मैं उसी चपल की धात्री हूँ
गौरव महिमा हूँ सिखलाती;
ठोकर जो लगने वाली है
उसको धीरे से समझाती।

(Continued)

(ग) सिय राम प्रेम पियूष पूरन होत जनमु न भरत को।
मुनि मन अगम जम नियम सम दम बिषम ब्रत आचरत को॥
दुख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को।
कलिकाल तुलसी से सठन्हि हठि राम सनमुख करत को॥

8. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की संदर्भ-सहित व्याख्या कीजिए :

(क) कर्म में आनंद अनुभव करने वालों ही का नाम कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनंद भरा रहता है कि कर्ता को वे कर्म ही फल-स्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दमन और क्लेश का शमन करते हुए चित्त में जो उल्लास और तुष्टि होती है वही लोकोपकारी कर्म-वीर का सच्चा सुख है। उसके लिए सुख तब तक के लिए रुका नहीं रहता जब तक कि फल प्राप्त न हो जाए; बल्कि उसी समय से थोड़ा-थोड़ा करके मिलने लगा है जब से वह कर्म की ओर हाथ बढ़ाता है।

(ख) प्रेम में कुछ मान भी होता है, कुछ ममत्व भी। श्रद्धा तो अपने को मिटा डालती है और अपने मिट जाने को ही अपना इष्ट बना लेती है। प्रेम अधिकार करना चाहता है, जो कुछ देता है, उसके बदले में कुछ चाहता भी है। श्रद्धा का चरम आनंद अपना समर्पण है, जिसमें अहम्मन्यता का ध्वंस हो जाता है।

(ग) टके के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान, टके के वास्ते हिन्दू से क्रिस्तान। टके के वास्ते धर्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचें, टके के वास्ते झूठी गवाही दें। टके के वास्ते पाप को पुण्य मानें, टके के वास्ते नीच को भी पितामह बनावें। वेद, धर्म, कुल मरजादा, सचाई, बड़ाई, सब टके सेर। लुटाय दिया अनमोल माल ले टके सेर।

9. कबीरदास और तुलसीदास के राम में अंतर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

10. 'श्रद्धा और भक्ति' निबंध के माध्यम से आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने जो व्यक्त करना चाहा है—उसकी प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

11. गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की 'अँधेरे में' कविता का क्या मर्म है, बताइए।

12. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की 'राम की शक्ति पूजा' का वस्तु-विन्यास की दृष्टि से मूल्यांकन कीजिए।

★★★